C-7(b) U-2 Pedagogy of Geography

Q. भूगोल शिक्षण के अध्यापन में लक्ष्य एवं सामान्य उद्देश्य क्या है? स्पष्ट करें।

Ans. भूगोल शिक्षण का लक्ष्य नवीन पाठ्यचर्या में सामाजिक आर्थिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों के विकास से जोड़ना है साथ ही समकालीन चुनौतियों से कैसे निपटा जाय इससे संदर्भित लक्ष्य का निर्धारण किया जाता है साथ ही प्राकृतिक संसाधन संरक्षित करने के उपायों को लक्ष्य में सम्मिलित किया जाता है। भूगोल में पर्यावरण संसाधन तथा स्थानीय से वैश्विक स्तर पर विभिन्न स्तरों के विकास के बीच संतुलन बिठाने का लक्ष्य निर्धारित किया जाता है। भूगोल विषय के सामान्य उद्देश्य दो रूपों में होते हैं :-

(i) सामान्य उद्देश्य
(ii) विशिष्ट उद्देश्य

(i) सामान्य उद्देश्य :- (a) भूगोल विषय के प्रति रुचि उत्पन्न कराना
(b) वैज्ञानिक दृष्टिकोण से परिचित कराना
(c) अंतर्राष्ट्रीय विकास के परिप्रेक्ष्य से परिचित कराना

(ii) विशिष्ट उद्देश्य :-

(a) ज्ञान - प्राप्ति का उद्देश्य :- हमारे प्राकृतिक और भौतिक वातावरण के विषय में हमारी ज्ञान- वृद्धि करना है।

(b) बौद्धिक उद्देश्य :- भूगोल के अध्ययन से आलोचनात्मक विचार- पद्धति का विकास होता है, तर्क - शक्ति तथा कल्पना के विकास में भूगोल का महत्वपूर्ण योगदान है। छात्र विभिन्न प्रदत्त तथ्यों की एक - दूसरे से तुलना करके 'सामान्यीकरण' के स्तर तक पहुँचता है।

(c) सांस्कृतिक उद्देश्य :- छात्रों को विभिन्न संस्कृतियों, रीति - रिवाजों तथा परम्पराओं का, कलाओं का और नैतिकता का ज्ञान कराना है। भौगोलिक वातावरण के परिणामस्वरूप किस प्रकार की संस्कृति तथा सभ्यता का विकास हुआ है और किसी देश के निवासी किसी विशेष प्रकार का जीवनयापन क्यों करते हैं?

(d) सामाजिक उद्देश्य :- छात्रों में प्रजातंत्रीय गुणों का विकास भूगोल द्वारा होता है, अच्छी नागरिकता के आदर्श तथा देश - प्रेम की भावना का विकास

होता है।

(e) अन्तर्राष्ट्रीयता की साझेदारी और सूझ-बूझ का विकास :- अन्तर्राष्ट्रीयता तथा विश्व-बन्धुत्व की भावना को प्रोत्साहन देता है। एक देश का दूसरे देश पर निर्भर रहना, देशों का पारस्परिक सहयोग और राष्ट्रों के मध्य भाईचारे की भावना को बढ़ावा देना भूगोल का विशिष्ट उद्देश्य है।

उपर्युक्त उद्देश्य ही भूगोल शिक्षण के उद्देश्य को क्रमिक रूप से जोड़ने का कार्य करती है। भूगोल प्राकृतिक सौंदर्य का सच्चा ज्ञान प्राप्त कराता है। भूगोल विभिन्न उद्योग, कृषि एवं व्यवसाय का वास्तविक ज्ञान कराता है। यह विभिन्नताओं के बीच समरसता कायम करने का कार्य करता है। इसका उद्देश्य आर्थिक योजनाओं को विकास से जोड़ना है। साथ ही प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग कहाँ तक आवश्यक है इसको रेखांकित करती है। यह मानवीय विकास के शृंखला को भी रेखांकित करता है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने एवं अन्य लोगों की

पहचान को निर्धारित करता है। यह बहुविधि दृष्टिकोण से भी परिचित करवाता है। यह बच्चों के मस्तिष्क में संरक्षण और पर्यावरण तथा विकास संबंधी आलोचनात्मक प्रवृत्ति विकसित करता है।